International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 03(I), July - September, 2023, pp. 79-82

विश्व :– औधोगिक प्रदूषण तथा पर्यावरण निम्नीकरण

नन्द सिंह शेखावत*

सार

किसी भी राष्ट्र के विकास में उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यूरोप, अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों का आधार उद्योग ही है। प्राचीन काल में भारत अपने विकसित उद्योगो, व्यवसायों एवं वाणिज्य के कारण ही ''सोने की चिड़िया''कहलाता था । किन्तु ब्रिटिश काल में अग्रेजों की शोषण नीति के कारण उसके वैभव और विकास के मूल आधारों पर कुठाराघात हुआ । भारत यूरोप की एक कच्चा माल की मण्डी बनकर रह गया , दो विश्व युद्वों के दौरान कुछ राजनैतिक व आर्थिक कारणों से देश में कुछ उद्योगिक विकास स्थापना की गयी । 1945 में जापान के हिरोशिमा , नाकासाकी पर परमाणु हमले के बाद पुनः तेजी से औद्योगिक विकास ,चीन में त्रीव औद्योगिक विकास ने मानव के जीवन को आसान एवं कम श्रम साध्य तो बना दिया है। लेकिन साथ ही औद्योगिक प्रदूषण ने मानव के सामने अनेक चुनौतियाँ पैदा कर दी है। प्रस्तुत शोध पत्र में औद्योगिक विकास से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या की गयी है।

शब्दकोशः *चोखों पाणी, कोनी, कळ–कारखाणा, प्रारूप, परिवेश, अवाछनीय, संकलित।*

प्रस्तावना

उद्योगों का विकास मानव के सामने एक आश्चर्य से कम नहीं था , इससे पहले सम्पूर्ण कार्य मानव अथवा पशु श्रम आधारित था, कार्य चाहे कृषि का हो या परिवहन का, वस्त्र निर्माण हो चाहे तेल धाणी का, बर्तन औजार, सभी कार्य श्रम आधारित थे। यूरोप में पुनर्जागरण के पश्चात् उद्योगों की विश्व स्तर पर प्रगति ने गति पकडी मानव खुश हुआ, शारीरिक श्रम, बचत, समय, पूंजी की बचत से मानव झूम उठा । परन्तु उद्योगों के प्रसार के परिणाम सामने आने पर मानव अपने आप को ठगा सा महसूस करने लगा। अनेक प्रकार के प्रदूषणों ने आज प्रकृति को झकझोर दिया है।

आज सजीव जगत ही नहीं मृदा, शैलें, खनिज, वायु, जल सभी तत्व इनकी चपेट में है। तथा अपनी प्राकृतिक गुणवता में कभी या गिरावट महसूस कर रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र

भारत विश्व मानचित्र में उतरी पूर्वी गोलार्ध में अवस्थित एक विविधतओं मे एकता वाला राष्ट्र है। चतुष्कोणीय स्थलाकृति वाला यह देश भूमध्य रेखा के उतर में 8°4′ से 37°6′ उतरी अक्षांशों तथा 68°7′ से 97°25′

* असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, बी.एन.डी. कॉलेज, नेछवा, सीकर, राजस्थान।

पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। कर्क रेखा और प्रधान मानक अक्षांश लगभग मध्य से गुजरती है तथा देश का उतर – दक्षिण विस्तार 3214 कि0 मी0 तक पूर्व – पश्चिम विस्तार 2933 कि0मी0 है। स्थलीय सीमा की लम्बाई 15200 कि0मी0 तथा जलीय सीमा 6100 कि0मी0 (द्वीपों सहित 7516 कि.मी.) लम्बी है। इसका क्षैत्रफल 32,87263 वर्ग कि0मी0 है।

अध्ययन का उद्वेश्य

प्रस्तुत अध्ययन भारत के उद्योगो से संबंधित है। औद्योगिक विकास का मानव एवं प्रकृति पर प्रभावों को स्पष्ट करना बढते प्रदूषण से स्थल , जल , वायु, मानव एवं जैव जगत पर पडने वाले प्रभावों को इंगित करना, अध्ययन का मुख्य उद्वेश्य है। बढते मशीनीकरण ने मानव को श्रम, धन, समय में तो साथ दिया है लेकिन इस साथ पर आश्रित रहने के कारण मानव आज स्वंय प्रकृति का साथ छोड. रहा है। राजस्थानी भाषा में कह सकां हाँ–

पी बान चोखो पाणी कोनी खा बान कोनी चौखा दाना।

इ वातावरण न खराब कर दियों ए कळकार खाणा।।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के उद्योगों के पर्यावरण पर प्रभावों की व्याख्या की गयी है। बदलते इस परिवेश के पीछे आर्थिक ,सामाजिक, राजनैतिक कारण अहम भूमिका निभाते है। प्राचीन काल में मानव कृषि घरेलू ,कार्य निर्माण कार्य में मानवीय श्रम पर निर्भर था परन्तू आज मानव मशीनी श्रम पर निर्भर हो गया है। बढते उद्योगो ने पर्यावरण के सभी घटकों (नैतिक –अनैतिक) कि गुणवता को परिवर्तित कर दिया है।

पर्यावरण – संसाधन प्रबन्धन के संबंध में अनैक नीतियाँ एवं संकल्पनायें विकसित की गई है जिनमें डेली (1977) की शून्य वृद्वि नीती, (ZERO GROWTH STRATEGY), नेसे का (ORGANIC AGRICULTURE FOR SELF SUSTAINING SOCIETIGS), नोगार्ड (1985) द्वारा प्रतिपादीत पर्यावरण अर्थशास्त्र प्रमुख है।

***Sustainable development is the development that meets the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs'*

Our Comman Future, _____Brundtland, 1987.

यू0एस0ए0 के राष्ट्रपति विज्ञान सलाहकार समितिनुसार

मनुष्य के कार्यो द्वारा ऊर्जा प्रारूप, विकिरण प्रारूप ,मौलिक एवं रासायनिक संगठन तथा जीवों की बहुलता में किए गए परिवर्तनों से उत्पन्न प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभावों के कारण आस पास के पर्यावरण में अवांछित एवं प्रतिकूल परिवर्तनों को प्रदूषण कहते है।

राष्ट्रीय पर्यावरण अनुसंधान परिषद के अनुसार

मनुष्य के कियाकलपों से उत्पन्न अपशिष्ट उत्पादों के रूप में पदार्थो एवं उर्जा के विमोचन से प्राकृतिक पर्यावरण मे होन वाले हानिकारक परिवर्तनों को प्रदूषण कहते है।

ओडम के अनुसार

वायु जल एवं मिट्टी के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गणों के किसी ऐसे अंवाछनीय परिवर्तन से जिससे मनुष्य स्वयं को सम्पूर्ण परिवेश के प्राकृतिक जैविक एवं सास्कृति तत्वों को हानी पहुॅचाता है, प्रदूषण कहते है।

लार्ड केनेट के अनुसार

''पर्यावरण में उन तत्वों या ऊर्जा की उपस्थिति को प्रदषण कहते है। जो मनुष्य द्वारा अनचाहे उत्पादित किये गये हो।''

अन्वेषण विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक संमको का उपयोग किया गया है। प्राथमिक समंक क्षेत्र सर्वेक्षण एवं द्वितीयक संमको को शोध पत्रों , पत्र –पत्रिकाओं , दैनिक समाचार पत्रों ,पुस्तको द्वारा संकलिकत किया गया है।

पर्यावरण निम्नीकरण के कारण

- जनसंख्या की तीव्र वृद्वि
- औधोगिकरण एवं नगरीकरण
- कृषि विकास में आधुनिकीकरण
- प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन
- सामाजिक सांस्कृतिक धार्मिक विचार
- लोगो मे जागरूकता का अभाव

संक्षेप में कह सकते है कि मानव निर्मित वस्तुएँ या मानव गतिविधियाँ कई मायनों में पर्यावरण निम्नीकरण का कारण बन रही है। जनसंख्या विस्फोट , प्रदूषण, जीवाश्म ईंधन, शहरीकरण, गरीबी और वनों की कटाई ने जलवायु परिवर्तन, मृदा क्षरण, वायु की खराब गुणवता और पीने के लिए अनुकूल जल आदि समस्याओं को जन्म दिया है।

उपर्युक्त पर्यावरण निम्नीकरण के कई प्रभाव पड. रहे है जो इस प्रकार हैः–

- प्राकृतिक आपदाओं में वृद्वि
- मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव
- जैव विविधता का अभाव
- वैश्विक तापमान में वृद्वि
- जल में अपशिष्ट एवं वृद्वि

पर्यावरण निम्नीकरण रोकने के प्रयास'

- हमारे पर्यावरण को स्वच्छ बनाने रखने हेतु हमें ठोस कणों को छानने का काम करने वाले उपकरण बैग फिल्टर, साइम्लीन सेपरेटर, साइम्लोन कलेक्टर जथा वैट स्क्रबर का प्रयोग करना चाहिए ।
- धुम्र प्रभाव को कम करने हेतु प्रयुक्त उपकरण इलेट्रो स्टैटिक प्रेसीपिटेटर , हाई एनर्जी स्क्रबर तथा फैब्रिक फिल्टर उपयोग मे लेने चाहिए।
- ओजोन विनाशकों के उत्पादन एवं उपयोग में कमी करनी होंगी जैसे रेफिजेस्टर का बढता उत्पादन एवं उपयोग एयर कण्डीशनर, स्प्रै कैन डिस्पेसर आदि के उत्पादन में कमी करनी होगी।
- सुपर सोनिक जेट विमानों से उत्सर्जित नाइट्रोजन ऑक्साइड पर संशोधन करने का प्रयास करना होगा।
- अन्टार्कटिका पर पर फैले 2 करोड. 83 लाख वर्ग कि0मी. ओजोन छिद्र को बढने से रोकना होगा अब उतरी ध्रुव पर भी ओजोन छिद्र बनने लगा है। इसे रोकना होगा।
- ग्रीन हाउस गैसों के उत्पादक देशों पर कडे प्रतिबंध लगाने होगें।
- टारेन्टो कान्फेंस के अनुसार के उत्सर्जन में 2005 तक 20 प्रतिशत तक कटौती करनी थी परन्तु पालना नहीं हुई ।
- मिथेन हाइट्रोकार्बन पर रोक लगानी होगी।

- बैंजपायरिन (धुमपान हाड्रोकार्बन प्रदुषक) पर रोक लगानी होगी।
- भवन निमार्ण साम्रगी से निकले वाली रेडान पर रोक लगानी होगी।
- सल्फर डाई ऑक्साइड गैसां के उत्पादों पर रोक लगानी होगी।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में आर्थिक ,सामजिक तथा राजनैतिक तनाव एवं तूफान का दौर है। इसमें मानव सपनों के महलों के खवाबों में अपने जीवन की गुणवता एवं उद्वेश्य दोनो को भूलता जा रहा है। विज्ञान एवं तकनीकी उधोग एवं प्रोद्योगिकी विकास का माध्यम ही रहना चाहिए विनाश का कारण नहीं, आज हम भौतिकवाद की अंधीदौड. में पैसे तो कमा रहे है परन्तु स्वास्थ्य, सभ्यता, नैतिकता, अमनचैन सहित मानव जीवन का उद्वेश्य ही भूल बैठै हैं।

अतः हमें संसाधनों का मितव्ययता पूर्ण आवश्यकतानुसार ही उपयोग करना चाहिए। अधिकाधिक और विलासिता पूर्ण नहीं, विलाश में विनाश निहित है। सादगी में सदुपयोगिता और सदाचार है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Rawat, Taj., (2001) Environmental Protection Takshila PRAKASHAN New Delhi.
2. Notiyal,Harish., (2021) Paryavaran Sarancshan evam Jagrukta.
3. Bhauguna, Sundar Lal.,(2013) Environment & Development, sarva Seva Sangh Prakakashan Varanasi.
4. Rathore Umesh., (2000) Environmental Crisis & Havol of Pollotion Takshila Prakashan.
5. Singh Savindra., (2015) Environmental Geography, Prarvalika Publication Varanasi Allaheabad.
6. पर्यावरण भूगोल, सविन्द सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहबाद
7. Geography Review Of India, vol. X Viii No. 4. 1956.

❖◆❖